IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तराखण्ड की पारंपरिक ज्ञान व्यवस्था से निर्मित उत्पादों का निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव

मनोज पाण्डे

शोधार्थी, वाणिज्य

डी एस बी परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय

डॉ जीवन चंद्र उपाध्याय

सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य

डी एस बी परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय

सारांश

आदि काल से ही उत्तराखंड की समृद्ध पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था का यहाँ के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली के प्रत्येक आयाम पर गहरा प्रभाव रहा है, जो उनके रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, बोली-भाषा, धर्म-आस्था, लोककला, लोकपर्व, लोकनृत्य आदि में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है और यहाँ के निवासियों को अन्य क्षेत्र के निवासियों से अलग पहचान भी दिलाता है। पारम्परिक उत्पादों का उत्पादन, वितरण और विनिमय, उस क्षेत्र विशेष की आर्थिक गतिविधियों का हिस्सा बन जाते थे और स्थानीयों की सामाजिक जीवन शैली में प्रभाव बनाये रखने के साथ-साथ उनकी आर्थिक जीवन शैली में भी अपना प्रभाव रखते थे। प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा पूर्व में उत्तराखंड के निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन शैली में गहरा प्रभाव रखने वाले पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों के उपयोग में आये परिवर्तनों की व्याख्या करने का यथा संभव प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का किसी भी क्षेत्र विशेष के निवासियों के लिए सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक व पर्यावरणीय दृष्टि से अपार महत्व होता है, जिस कारण स्थानीय निवासी इन उत्पादों का बार-बार प्रयोग करते हैं। उपयोग एवं उपभोग के इसी चक्रानुक्रम का वर्षों तक अनुसरण करते-करते यह उत्पाद, उस क्षेत्र विशेष के निवासियों की परम्परा एवं संस्कृति बन उनकी सामाजिक जीवन शैली का अभिन्न अंग बन जाते हैं। इसीलिए, इन परम्पराओं एवं संस्कृतियों का क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर गहरा प्रभाव प्रत्यक्ष दिखाई देता है। यही तथ्य उत्तराखंड के पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों के लिए भी उचित प्रतीत होता है क्योंकि, आदि काल से ही उत्तराखंड की समृद्ध पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था का यहाँ के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली के प्रत्येक आयाम पर गहरा प्रभाव रहा है, जो उनके रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, बोली-भाषा, धर्म-आस्था, लोककला, लोकपर्व, लोकनृत्य आदि में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है और यहाँ के निवासियों को अन्य क्षेत्र के निवासियों से अलग पहचान भी दिलाता है।

पूर्व में, पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों, जिनका क्षेत्र विशेष के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर बहुत प्रभाव होता था, उनकी मांग को क्षेत्र विशेष के निवासी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों से पूर्ण करते थे। इस कारण पारम्परिक उत्पादों का उत्पादन, वितरण और विनिमय, उस क्षेत्र विशेष की आर्थिक गतिविधियों का हिस्सा बन जाते थे और स्थानीयों की सामाजिक जीवन शैली में प्रभाव बनाये रखने के साथ-साथ उनकी आर्थिक जीवन शैली में भी अपना प्रभाव रखते थे। इसी प्रकार उत्तराखंड के पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पाद भी पूर्व में इस क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन शैली के महत्त्वपूर्ण अंग थे, परन्तु विगत दशकों में क्षेत्र के निवासियों की जीवन शैली में हुए व्यापक परिवर्तनों के कारण इन पारम्परिक उत्पादों का यहाँ के निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव में भी परिवर्तन होना स्वाभाविक है। वाणिज्यिक दृष्टि से इन परिवर्तनों का अध्ययन इसलिए आवश्यक हो जाता है, ताकि सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की सुस्पष्ट व्याख्या कर नकारात्मक प्रभावों को न्यून करने के लिए यथा समय समुचित प्रयास किये जा सकें।

शोध कार्य विधि

अतः प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा पूर्व में उत्तराखंड के निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन शैली में गहरा प्रभाव रखने वाले पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों के उपयोग में आये परिवर्तनों की व्याख्या करते हुए उत्तराखंड की समृद्धशाली पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था को संरक्षित एवं संवर्धित करने के लिए अपेक्षित एवं आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करने का यथा संभव प्रयास किया गया है। उत्तराखंड की पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था में आये परिवर्तनों के मूल्यांकन हेतु पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था से निर्मित उत्पादों का यहाँ के निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस हेतु उपलब्ध सीमित साहित्य का आलोचनात्माक विश्लेषण करते हुए विषय हेतु उपयुक्त शोध कार्य विधि की सहायता ली गयी। इस कार्य के लिए प्रतिचयन विधि द्वारा उत्तराखंड के कुमाऊँ मंडल के अंतर्गत आने वाले पर्वतीय जनपद अल्मोड़ा, 'जो सम्पुर्ण कुमाऊँ मंडल का प्राकृतिक, भौगोलिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व पारम्परिक रूप से आदर्श प्रतिनिधित्व करता है', की अल्मोड़ा तहसील को समग्र अध्ययन क्षेत्र और अल्मोड़ा तहसील के अंतर्गत आने वाले एक शहरी व पाँच ग्रामीण क्षेत्रों को प्रतिदर्श के रूप में अध्ययन हेतु चयनित किया गया। तदुपरांत जनपद अल्मोड़ा में पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित पाँच उत्पादों यथा- बाल मिठाई (पाक कला), पिछोड़ा (परिधान),

पारम्परिक ताम्र शिल्प (शिल्प कला), छोलिया नृत्य (सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत) एवं पारम्परिक चिकित्सा पद्धति (चिकित्सकीय ज्ञान परम्परा) का अध्ययन हेतु चयन किया गया।

अध्ययन हेतु चयनित उपरोक्त उत्पादों को एक भौगोलिक ब्रांड के रूप में लिया गया और अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर इन ब्रांड्स के प्रभाव के मूल्यांकन हेतु 'डेविड आकर' द्वारा प्रतिपादित 'ब्रांड इक्विटी मॉडल' का उपयोग किया गया। ब्रांड इक्विटी प्रायः उपभोक्ताओं के किसी विशिष्ट ब्रांड के प्रति सकारात्मक मनोवैज्ञानिक धारणाओं का गुणात्मक माप होती है, इसीलिए ब्रांड के मूल्यांकन की इस पद्धति को उपभोक्ता केन्द्रित पद्धति भी कहा जाता है। ब्रांड इक्विटी को प्रायः चार घटकों यथा- ब्रांड जागरूकता, लगाव, गुणवत्ता के प्रति धारणा और ब्रांड निष्ठा का संयुक्त प्रतिफल कहा जाता है।

ब्रांड इक्विटी की व्याख्या करने वाले इन चार घटकों से सम्बन्धित पदों का प्रस्तुत शोध कार्य हेतु बनायी गयी अनुसूची में प्रयोग किया गया। अनुसूची द्वारा अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का प्रभाव जानने हेतु पञ्च पदीय मापनी का उपयोग किया गया। उत्तरदाताओं से प्राप्त दृष्टिकोण के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु उनका वर्गीकरण और सारणीकरण किया गया तथा प्रतिशत एवं औसत की गणना की गयी। चूंकि प्राप्त औसत का मान 1 और 5 के मध्य हो सकता था इसीलिए प्राप्त औसत संख्याओं को 3 का मध्य मान लेते हुए दो भाग में वर्गीकृत किया गया, जहाँ 3 से कम औसत को पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर बहुत कम प्रभाव जबकि 3 से अधिक औसत को चयनित पारम्परिक उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर अत्यधिक गहरे प्रभाव के सूचक के रूप में स्थान दिया गया

विश्लेषण एवं निर्वचन

अग्रसारणित में अध्ययन हेतु चयनित पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभावों को समेकित रूप से प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या 1

उत्तराखंड के पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था से निर्मित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव

(ब्रांड इक्विटी के तत्व)	उत्तराखंड के पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था से निर्मित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव के कारक तत्व	बाल मिठाई	पिछोड़ा	पारम्परिक ताम्र शिल्प	छोलिया	पारम्परिक चिकित्सा पद्धति	ब्रांड इक्विटी के तत्वों का संयुक्त औसत	
ब्रांड अवेयरनेस	पारम्परिक उत्पादों की विशेषताओं एवं विशिष्टताओं के प्रति जागरूकता का स्तर	4.03	3.83	4.05	4	4	3.98	3.98
ब्रांड एसोसिएशन	पारम्परिक उत्पाद आपको आपकी सामाजिक/अध्यात्मिक/ धार्मिक/सांस्कृतिक/चिकित्सकीय परम्परा का स्मरण कराता है	4.05	3.57	2.3	3.57	1.38	2.97	3.20
	पारम्परिक उत्पाद की क्षेत्रीय पहचान के प्रतीक होने और इस पर गौरवान्वित होने के प्रति धारणा	3.98	4.02	3.97	4.02	1.2	3.44	
परसीव्ड क्वालिटी	पारम्परिक उत्पादों की कथित गुणवत्ता के प्रति धारणा	3.37	4.05	4.07	4.02	2.1	3.52	3.52
ब्रांड लॉयल्टी	अन्य स्थानापन्न उत्पादों की बजाय पारम्परिक उत्पादों को क्रय करने के प्रति उत्तरदाताओं की निष्ठा	2.86	3.52	3.53	3.52	1.17	2.92	2.82
	पारम्परिक उत्पादों को खरीदने के लिए अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को प्रेरित करने के प्रति विचार	3.47	3.1	2.92	2.88	1.25	2.72	
ब्रांड इक्विटी (उत्पादवार एवं संयुक्त)	**पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था से निर्मित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव**	**3.63**	**3.68**	**3.47**	**3.67**	**1.85**	**3.26**	**3.26**

सारणी संख्या1 स्पष्ट करती है कि अध्ययन हेतु चयनित पारम्परिक उत्पादों की विशेषताओं के प्रति स्थानीयों में जागरूकता का स्तर उच्च है। स्थानीय निवासियों के दृष्टिकोण से यह भी ज्ञात होता है कि वह पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों को क्षेत्रीय पहचान का प्रतीक मानते हैं तथा इन पर गर्वित महसूस करते हैं। यह भी पुष्ट हुआ कि पारम्परिक उत्पादों की उच्च गुणवत्ता के प्रति स्थानीय आश्वस्त हैं, परन्तु पारम्परिक उत्पादों के इन सभी सकारात्मक पक्षों के बाद भी स्थानीयों की निष्ठा (जिसका औसत 3 से कम है), इन उत्पादों को क्रय करने के प्रति कम होती जा रही है। पारम्परिक उत्पादों के मौखिक संवर्धन के प्रति स्थानीयों का दृष्टिकोण (जिसका औसत 3 से कम है), उल्लेखित करता है कि स्थानीय निवासी अब इन पारम्परिक उत्पादों का मौखिक संवर्धन भी कम कर रहे हैं, जो इन उत्पादों को आने वाली पीढ़ियों में हस्तांतरित करने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। अध्ययन हेतु चयनित सभी पारम्परिक उत्पादों का स्थानीयों की सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव का संयुक्त औसत मान 3.26 है, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि पारम्परिक उत्पादों का आज भी अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर गहरा प्रभाव है।

किसी भी उत्पाद की उच्च ब्रांड इक्विटी अर्थात लोगों की सामाजिक जीवन शैली पर गहरा प्रभाव होने पर उस उत्पाद की मांग हमेशा बनी रहती है और मांग बने रहने के कारण उसका उत्पादन एवं व्यवसाय लाभप्रद होता है। परिणामस्वरूप वह उत्पाद, उत्पादन क्षेत्र के निवासियों के लिए व्यावसायिक अवसर के रूप में अपना स्थान बनाये रखता है और क्षेत्र विशेष के निवासियों के लिए आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो जाता है। आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के कारण इन उत्पादों के व्यवसाय की ओर अधिक से अधिक स्थानीय आकर्षित होते हैं और क्षेत्र विशेष की आर्थिक

जीवन शैली में इन उत्पादों का प्रभाव बढ़ता जाता है। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा (सारणी संख्या 6.1) यह स्पष्ट किया जा चुका है कि उत्तराखंड की पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का यहाँ के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर गहरा प्रभाव है, जिसके आधार पर यह अनुमानित किया जा सकता है कि इन उत्पादों का यहाँ के निवासियों की आर्थिक जीवन शैली पर भी गहरा प्रभाव होगा। चूंकि क्षेत्र विशेष के निवासियों की आर्थिक जीवन शैली पर सम्बन्धित क्षेत्र विशेष के प्राकृतिक, मानव और बौद्धिक संसाधनों द्वारा निर्मित उत्पादों के व्यवसायीकरण के स्तर का सकारात्मक प्रभाव माना जाता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की आर्थिक जीवन शैली में प्रभाव का मूल्यांकन, इन उत्पादों के व्यवसायीकरण की स्थिति से किया जा सकता है। किसी भी उत्पाद अथवा सेवा की मांग व आपूर्ति, उत्पादों के व्यवसाय में निवेश के स्तर, उत्पादों के व्यवसाय से सृजित रोजगारों की संख्या, उत्पादों के व्यवसाय हेतु क्षेत्र में व्यावसायिक सुगमता और उत्पादों के प्रचार के कारण क्षेत्र को मिलने वाली पहचान का विश्लेषण करने से उन उत्पाद अथवा सेवाओं के व्यवसायीकरण के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है। परन्तु, इस प्रकार के विश्लेषण के लिए मुख्यतः मात्रात्मक समंकों का उपयोग किया जाता है, जो पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों के व्यवसायीकरण की व्याख्या करने वाले उपरोक्त वर्णित आधारों पर उपलब्ध नहीं थे। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में पारम्परिक उत्पादों के व्यवसायीकरण के स्तर को मापने के लिए गुणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस हेतु अनुसूची के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र के निवासियों का उपरोक्त वर्णित आधारों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया तथा पञ्च पदीय मापनी का प्रयोग करते हुए औसत मान की गणना और विश्लेषण, पूर्व वर्णित सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव की भांति ही की गयी है, जिसे अग्र सारणी की सहायता से समझा जा सकता है-

सारणी संख्या 2

उत्तराखंड के पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था से निर्मित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव

उत्तराखंड के पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था से निर्मित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव	बाल मिठाई	पिछोड़ा	पारम्परिक ताम्र शिल्प	छोलिया	पारम्परिक चिकित्सा पद्धति	दृष्टिकोण का औसत
पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था पर आधारित उत्पादों की बढती माँग के प्रति दृष्टिकोण	3.8	2.7	2.28	2.7	1.33	2.56
पारम्परिक ज्ञान आधारित उत्पादों की आपूर्ति/उत्पादन में वृद्धि के प्रति दृष्टिकोण	2.51	2.28	1.55	1.23	1.35	1.78
उत्तराखंड की पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों के व्यवसाय से लाभ कमाए जाने के प्रति दृष्टिकोण	2.71	2.4	1.5	1.23	1.3	1.83
पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों से क्षेत्र में रोजगार सृजित होने के प्रति दृष्टिकोण	2.39	2.23	3.05	1.23	1.4	2.06
पारम्परिक उत्पादों के लिए व्यावसायिक सुगमता के प्रति दृष्टिकोण	2.61	2.38	1.33	1.23	1.4	1.79
पारम्परिक उत्पादों की वजह से अल्मोड़ा (उत्तराखंड) को विशेष पहचान प्राप्त होने के प्रति स्थानीयों का दृष्टिकोण	2.86	2.25	2.55	2.25	2.37	2.46
आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव का उत्पादवार औसत	2.81	2.37	2.04	1.65	1.53	2.08

सारणी संख्या 2 से पुष्ट होता है कि बाल मिठाई के अतिरिक्त अन्य पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों की मांग एवं आपूर्ति में वृद्धि के प्रति अध्ययन क्षेत्र के निवासी नकारात्मक हैं, जिसका आशय है कि स्थानीयों के अनुसार विगत वर्षों में इन उत्पादों की मांग व उत्पादन में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं हुई है, जिस कारण शायद स्थानीय निवासी इन उत्पादों के व्यवसाय से लाभर्जन के प्रति भी नकारात्मक हैं। स्थानीयों का यह भी मानना है कि पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों के व्यवसाय से क्षेत्र में रोजगार सृजित नहीं होते हैं। पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का व्यवसाय शुरू करने में सुगमता के प्रति भी स्थानीयों का दृष्टिकोण नकारात्मक है। स्थानीयों को यह भी लगता है कि पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों के कारण अध्ययन क्षेत्र को विशेष पहचान नहीं मिल पायी है। अध्ययन हेतु चयनित प्रत्येक पारम्परिक उत्पाद का स्थानीयों की आर्थिक जीवन शैली में प्रभाव का औसत 3 से कम है[1], जो पुष्ट करता है कि किसी भी पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पाद का यहाँ के निवासियों की आर्थिक जीवन शैली में गहरा प्रभाव नहीं है। आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव का संयुक्त औसत मान भी स्थानीय निवासियों की आर्थिक जीवन शैली में अध्ययन हेतु चयनित समस्त पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों के अत्यंत न्यून प्रभाव को पुष्ट करता है। सामान्यतः यह माना जाता है जिन सांस्कृतिक व पारम्परिक उत्पादों का क्षेत्र विशेष के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर गहन प्रभाव होगा, उनका स्वाभाविक रूप से स्थानीयों की आर्थिक जीवन शैली पर भी गहरा प्रभाव होगा, परन्तु प्रस्तुत अध्ययन हेतु एकत्र समंकों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में प्रायः ऐसा नहीं हो रहा है। समंकों के तुलनात्मक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन हेतु चयनित पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का स्थानीयों की सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव अधिक (सारणी संख्या 1) है, जबकि आर्थिक जीवन शैली पर इनका प्रभाव अत्यंत न्यून (सारणी संख्या 2) है। जहाँ एक ओर अध्ययन हेतु चयनित प्रत्येक पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पाद का सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव का औसत 3 से अधिक है, वहीं दूसरी ओर इन उत्पादों का स्थानीयों की आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव का औसत 3 से कम है।

रेखाचित्र संख्या 1

अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन शैली पर पारम्परिक उत्पादों का प्रभाव

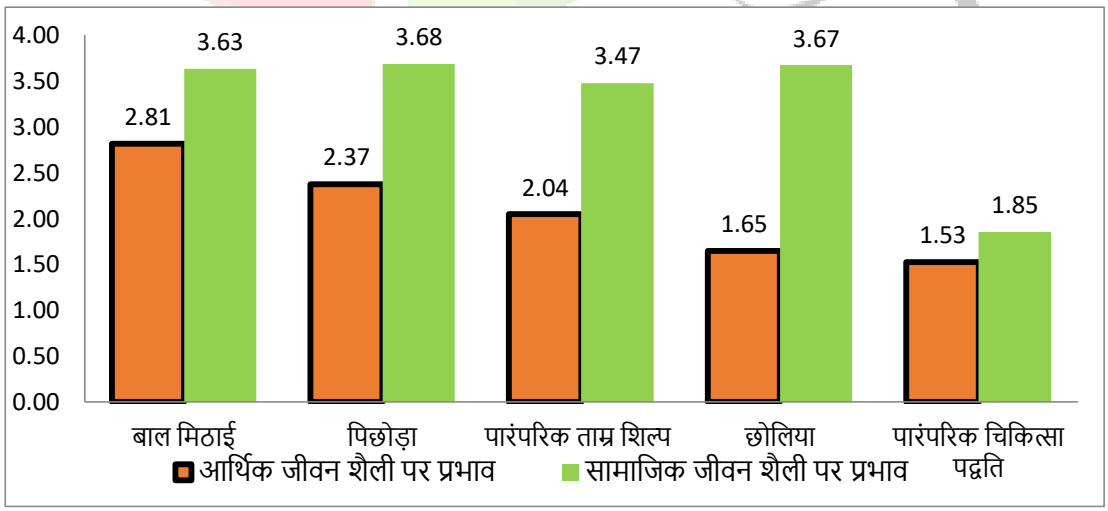

[1] औसत 1 से 5 के मध्य ही हो सकता है; और माध्य 3 हो सकता है

पारम्परिक उत्पादों के सामाजिक और आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव में प्रतीत होने वाला यह अंतर मात्र संयोगवश अथवा प्रतिचयन की त्रुटियों के कारण भी हो सकता है, इसलिए इस अंतर की सांख्यिकीय पुष्टि हेतु टी-टेस्ट का उपयोग किया गया है। टी-टेस्ट का परिगणित मान (Calculated Value), आलोचनात्मक सारणीबद्ध मान (Critical Tabulated value) से कम होने का आशय है कि पारम्परिक उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक व आर्थिक जीवन शैली में पड़ने वाले प्रभाव के मध्य जो भी अंतर प्रतीत होता है, वह मात्र संयोगवश अथवा प्रतिचयन की त्रुटियों के कारण है तथा पारम्परिक उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक व आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव एक समान है; परन्तु टी-टेस्ट का परिगणित मान, आलोचनात्मक सारणीबद्ध मान से अधिक होने का आशय है कि पारम्परिक उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक व आर्थिक जीवन शैली में पड़ने वाले प्रभाव के मध्य जो भी अंतर प्रत्यक्ष हो रहा है, वह सांख्यिकीय रूप से अर्थपूर्ण है। सारणी संख्या 3 में टी-टेस्ट के माध्यम से, पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का यहाँ के निवासियों की सामाजिक और आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

सारणी संख्या 3

पारम्परिक उत्पादों का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण

	आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव का समेकित औसत मान (सारणी संख्या 6.2)	सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव का समेकित औसत मान (सारणी संख्या 6.1)	टी-टेस्ट परिगणित मान (CALCULATED VALUE)	टी-टेस्ट का आलोचनात्मक सारणीबद्ध मान (TABULATED VALUE ONE TAILED)
बाल मिठाई	2.81	3.62	7.229	1.671
पिछोड़ा	2.37	3.68	21.858	1.671
पारम्परिक ताम्र शिल्प	2.04	3.47	25.395	1.671
छोलिया	1.64	3.66	35.667	1.671
पारम्परिक चिकित्सा पद्धति	1.64	1.85	3.855	1.671

सारणी संख्या 3 से ज्ञात होता है कि टी-टेस्ट का परिगणित मान, आलोचनात्मक सारणीबद्ध मान से अधिक है, जो स्पष्ट करता है कि यह अंतर मात्र संयोगवश अथवा प्रतिचयन की त्रुटियों के कारण नहीं है, बल्कि यह पारम्परिक उत्पादों के आर्थिक और सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव के मध्य प्रतीत होने वाले अंतर की सार्थकता को सांख्यिकीय रूप से पुष्ट कर रहा है। चूंकि पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था आधारित उत्पादों का अध्ययन क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव का औसत, आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव से अधिक है और यह अन्तर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है, अतः इस आधार पर प्रस्तुत कहा जा सकता है कि **"उत्तराखंड की पारम्परिक ज्ञान व्यवस्था एवं पर्यावरणीय/सांस्कृतिक/आध्यात्मिक/धार्मिक विरासत का उत्तराखंड के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर गहरा प्रभाव है, परन्तु आर्थिक जीवन शैली पर इन उत्पादों का अधिक प्रभाव नहीं है"।** प्रायः यह माना जाता है सांस्कृतिक व पारम्परिक उत्पादों का क्षेत्र विशेष के निवासियों की सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव में परिवर्तन होने के कारण इन उत्पादों का स्थानीयों की आर्थिक जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव में भी परिवर्तन होगा। इस कारक-प्रभाव सम्बन्ध के विश्लेषण हेतु प्रस्तुत अध्ययन में सह-सम्बन्ध एवं प्रतिगमन विधि का उपयोग किया गया है, जिसके लिए सामाजिक जीवन शैली पर पारम्परिक उत्पादों के प्रभाव को स्वतन्त्र चर और आर्थिक जीवन शैली पर पारम्परिक उत्पादों के प्रभाव को आश्रित चर अनुमानित किया गया है।

सारणी संख्या 4
क्षेत्र के निवासियों की सामाजिक और आर्थिक जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव के मध्य कारक-प्रभाव सम्बन्ध का विश्लेषण

विवरण	परिमाप
पारम्परिक उत्पादों का यहाँ के निवासियों की आर्थिक एवं सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव के मध्य सह-सम्बन्ध का मान	0.52(5% सार्थकता स्तर पर अर्थपूर्ण)
पारम्परिक उत्पादों का यहाँ के निवासियों की आर्थिक एवं सामाजिक जीवन शैली पर प्रभाव का मध्य प्रतिगमन गुणांक (आर. स्क्वायर)	0.27

उपरोक्त सारणी में प्रदत्त, पारम्परिक उत्पादों का यहाँ के निवासियों की आर्थिक एवं सामाजिक जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव के मध्य, सह-सम्बन्ध के मान से ज्ञात होता है कि पारम्परिक उत्पादों का स्थानीयों की आर्थिक और सामाजिक जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव के मध्य प्रत्यक्ष सकारात्मक सम्बन्ध है, अर्थात सामाजिक जीवन शैली में पारम्परिक उत्पादों का प्रभाव बढने से इन उत्पादों के आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव में भी वृद्धि होगी। परन्तु प्रतिगमन गुणांक, जिसका मान 0.27 है, वह दोनों चरों के मध्य कारक-संबध प्रभाव को पुष्ट नहीं करता है, अर्थात सामाजिक जीवन शैली में पारम्परिक उत्पादों के प्रभाव में परिवर्तन होने से इन उत्पादों का यहाँ के निवासियों की आर्थिक जीवन शैली पर प्रभाव में परिवर्तन नगण्य अथवा बिलकुल नहीं हो रहा है। इसका आशय यह भी हो सकता है कि पारम्परिक उत्पादों का स्थानीयों की सामाजिक और आर्थिक जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव को परिवर्तित करने में अन्य कारक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हों।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, एस. पी., अन्य. उत्तराखंड: पास्ट, प्रेज़ेंट, एंड फ्यूचर. इंडिया, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 1995.
2. अग्रवाल, दीपा. फोक टेल्स ऑफ उत्तराखंड. इंडिया, चिल्ड्रेनस बुक ट्रस्ट, 2008.
3. अग्रवाल, दीपा. राजुला एंड द वेब ऑफ डेंजर. इंडिया, हॅचेट इंडिया, 2012
4. अग्रवाल, मीनू,. रूरल मार्केटिंग, मीडीया प्लॅनिंग एंड कन्ज़्यूमर प्रोटेकशन. इंडिया, न्यू सेंचुरी पब्लिकेशन्स, 2016.
5. अग्रवाल, सी. एम.. मैन, कल्चर, एंड सोसाइटी इन द कुमाऊँ हिमालयाज: जनरल बी.सी. जोशी कमेमोरेशन वॉल्यूम. इंडिया, श्री अल्मोड़ा बुक डीपो, 1996.
6. अग्रवाल, सी. एम्., गोलू देवता, द गॉड ऑफ जस्टीस ऑफ कुमाऊँ हिमालयाज . इंडिया, श्री अल्मोड़ा बुक डीपो, 1992.
7. अटकिनसन, एडविन थॉमस., हिमालयन गज़ेटर्र: वॉल्यूम्स 1 टू 3. इंडिया, नटराज पब्लिशर्स, 2014.
8. अरोरा, अजय. एड्मिनिस्ट्रेटिव हिस्टरी ऑफ उत्तराखंड (कुमाओं एंड गढ़वाल), ड्यूरिंग द रूल ऑफ द ईस्ट इंडिया कंपनी, 1815-1857. इंडिया, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1996.
9. एट्केन, बिल. द नंदा देवी अफेयर. इंडिया, पेंग्विन बुक्स लिमिटेड, 2000.
10. आकाश, बी. एस. भंडारी, नवनीत, एथनोमेडिसिनल प्लांट यूज़ एंड प्रॅक्टीस इन ट्रडीशनल मेडिसिन. युनाइटेड स्टेट्स, आई.जी.आई. ग्लोबल, 2020.
11. आकेर, डेविड. आकेर ऑन ब्रान्डिंग: 20 प्रिन्सिपल्स देट ड्राइव सक्सेस. युनाइटेड स्टेट्स, मॉर्गन जेम्ज़ पब्लिशिंग, 2014.
12. इंटेलेक्चुयल प्रॉपर्टी एंड ट्रडीशनल नालेज. स्विट्ज़रलैंड, विपो, 2008.
13. इएर, सरीया. द इकनॉमिक्स ऑफ रिलिजन इन इंडिया., युनाइटेड स्टेट्स, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2018.
14. उत्तराखंड डिस्ट्रिक्ट फैक्टबुक : अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट: डिस्ट्रिक्ट लेवेल सोसिओ-इकनोमिक डाटा ऑफ अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट, उत्तराखंड. न.प., डाटनेट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड., 2017.

15. उत्तराखंड डेवेलपमेंट रिपोर्ट. इंडिया, एकॅडेमिक फाउंडेशन, 2011.
16. उनियाल, हेमा., कुमाऊँ के प्रसिद्ध मंदिर (धर्म, संस्कृति एवं वास्तुशिल्प). इंडिया, तक्षशिला प्रकाशन, 2005.
17. एनहॅन्सिंग लाइव्लिहुड्स थ्रू लाइव्स्टॉक नालेज सिस्टम्स (इ.एल.के.एस.) इन झारखंड, उत्तराखंड एंड नागालैंड : नालेज ऐटिट्यूड एंड प्रैक्टिस (के.ए.पी.) बेसलाइन रिपोर्ट 2013. न.प., आई.एल.आर.आई.
18. ऑर्गनाइज़ेशन, वर्ल्ड इंटेलेक्चुयल प्रॉपर्टी. डॉक्युमेंटिंग ट्रडीशनल नालेज - आ टूलकिट. स्विट्ज़रलैंड, वर्ल्ड इंटेलेक्चुयल प्रॉपर्टी ऑर्गनाइज़ेशन, 2017.
19. ओहरी, लोकेश., टिल किंग्डम कम: मिडीएवल हिंदूइसम इन द मॉडर्न हिमालय., न.प., स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क प्रेस, 2021.
20. कफलटीया, हिमांशु., कफलटीया, गुंजन शर्मा., अ कोम्प्रेहेंसिवे स्टडी ऑफ उत्तराखंड. न.प., नोशन प्रेस, 2019.
21. कला, चंद्र प्रकाश. नंदा'स नीलकंठ. युनाइटेड किंग्डम, पार्टरिड्ज पब्लिशिंग इंडिया, 2015.
22. कश्यप, प्रदीप., रूरल मार्केटिंग. इंडिया, पियरसन इंडिया, 2011.
23. काक, मंजू. इन द शॅडो ऑफ द देवी कुमाओं: ऑफ आ लैंड, आ पीपल, आ क्रॅफ्ट. इंडिया, नियोगी बुक्स, 2017.
24. कोटलर, फिलिप. प्रिन्सिपल्स ऑफ मार्केटिंग. इंडिया, पीअरसन एजुकेशन, 2008.
25. कोटलर, फिलिप. मार्केटिंग प्लेसस. युनाइटेड स्टेट्स, फ्री प्रेस, 2002.
26. कोठारी, सी. आर., रिसर्च मेथडॉलजी: मेथोड्स एंड टेक्नीक्स. इंडिया, न्यू एज इंटरनॅशनल (प) लिमिटेड, 2004.
27. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, मिनिस्ट्री ऑफ फाइनान्स. इकनामिक सर्वे 2017-18 (वॉल्यूम I आंड वॉल्यूम II). इंडिया, ओऊ.यु.पी. इंडिया, 2018.
28. गिरी इन्स्टिट्यूट ऑफ डेवेलपमेंट स्टडीस, डेवेलपमेंट ऑफ हिल एरीयाज़: इश्यूस एंड अप्रोचस. इंडिया, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, 1983
29. गुप्ता, पंकज. एवं अन्य., हीलिंग ट्रेडिशन्स ऑफ द नार्थ वेस्टर्न हिमालयाज . इंडिया, स्प्रिंगर इंडिया, 2014.
30. गुप्ता, पूनम, और कुमार, दिनेश., रूरल मार्केटिंग: चॅलेंजस एंड ऑपर्चुनिटीस. इंडिया, सेज पब्लिकेशन्स, 2019.
31. गुप्ता, संतोष. रिसर्च मेथडॉलजी एंड स्टॅटिस्टिकल टेक्नीक्स. इंडिया, दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स, 2002.
32. गोखले नमिता, राग पहाड़ी. (2020). (न.प.): राजकमल प्रकाशन.